B.KUMAR'S ACADEMY

विषय - हिंदी | **Unit Test - 01** | **गुण : ३०**

कक्षा - दसवीं | **भारत महिमा, लक्ष्मी, वाह रे ! हमदर्द** | **समय : १ घंटा**

प्र.१ : अ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए। ८

लक्ष्मी शांत खड़ी अपने जख्मों पर तेल लगवाती रही। वह करामत अली के मित्र ज्ञान सिंह की निशानी थी। ज्ञान सिंह और करामत अली एक-दूसरे के पड़ोसी तो थे ही,वे कारखाने में भी एक ही विभाग में काम करते थे। प्राय: एक साथ ड्यूटी पर जाते और एक साथ ही घर लौटते।

ज्ञान सिंह को मवेशी पालने का बहुत शौक था । प्राय: उसके घर के दरवाजे पर भैंस या गाय बँधी रहती । तीन बरस पहले उसने एक जर्सी गाय खरीदी थी । उसका नाम उसने लक्ष्मी रखा था । अधेड़ उम्र की लक्ष्मी इतना दूध दे देती थी कि उसके घर की जरूरत पूरी हो जाने के बाद की दूध गली के कुछ घरों में चला जाता । दूध बेचना ज्ञान सिंह का धंधा नहीं था । केवल गाय का चारा और दर्रा आदि देने के लिए कुछ पैसे जुटा लेता था।

नौकरी से अवकाश के बाद ज्ञान सिंह को कंपनी का वह मकान खाली करना था । समस्या थी तो लक्ष्मी की। वह लक्ष्मी को किसी भी हालत में बेच नहीं सकता था । उसे अपने साथ ले जाना भी संभव नहीं था । जब अवकाश में दस-पंद्रह दिन ही रह गए तो करामत अली से कहा- "मियाँ! अगर लक्ष्मी को तुम्हें सौंप दूँ तो क्या तुम उसे स्वीकार करोगे...?

मियाँ करामत अली ने कहा था-"नेकी और पूछ-पूछ । भला इससे बड़ी खुशनसीबी मेरे लिए और क्या हो सकती है?" करामत अली पिछले एक वर्ष से उस गाय की सेवा करता चला आ रहा था। गाय की देखभाल में कोई कसर नहीं छोड़ रखी थी।

करामत अली को लक्ष्मी की पीठ पर रोगन लगाने के बाद भी इत्मीनान नहीं हुआ। वह उसके सिर हाथ फेरता रहा। लक्ष्मी स्थिर खड़ी उसकी ओर जिज्ञासापूर्ण दृष्टी से देखती रही। करामत अली को लगा जैसे लक्ष्मी कहना चाहती हो-"यदि मैं तुम्हारे काम की नहीं हूँ तो मुझे आजाद कर दो। मैं यह घर छोड़कर कहीं चली जाऊँगी।"

करामत अली ड्यूटी पर जाने की तैयारी में था। तभी रमजानी बोली-"रहमान के अब्बा, अगर लक्ष्मी दूध नहीं देगी तो हम इसका क्या करेंगे? क्या खूँटे से बाँधकर हम इसे खिलाते-पिलाते रहेंगे...?

१. संजाल पूर्ण कीजिए । २

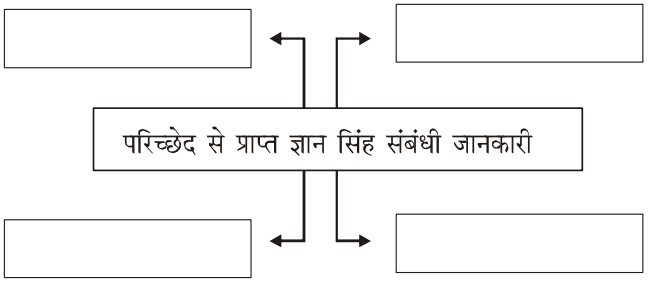

२. मुद्दों के आधार पर आकृति पूर्ण कीजिए : २

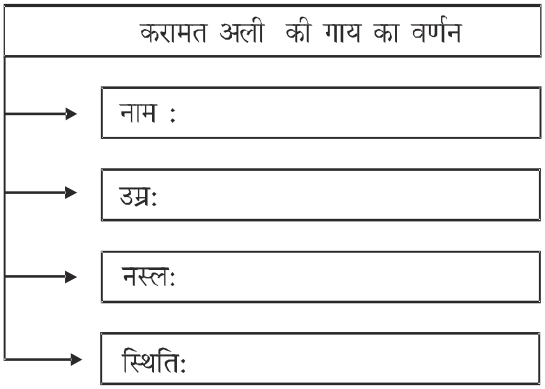

३. १) निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए : **१**

अ) बरस = ब) जरूरत =

२) निम्नलिखित शब्दों का वचन बदलकर लिखए : **१**

अ) निशानी - ब) बेटी -

४. पशुपालन के विषय पर ६ से ८ पंक्तियों में अपने विचार लिखिए । **२**

आ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए । **८**

मुझसे मिलने के लिए सबसे पहले वे लोग जाए जिनकी टाँग या कुछ और टूटने पर मैं कभी उनसे मिलने गया था, मानो वे इसी दिन का इंतजार कर रहे थे कि कब मेरी टाँग टूटे और कब वे अपना एहसान चुकाएँ। उनकी हमदर्दी में यह बात खास छिपी रहती है कि देख बेटा, वक्त सब पर आता है ।

दर्द के मारे एक तो मरीज को वैसे ही नींद नही आती, यदि थोड़ी-बहुत आ भी जाए तो मिलने वाले जगा देते हैं-खास कर वे लोग जो सिर्फ औपचारिकाता निभाने आते हैं। उन्हें मरीज से हमदर्दी नहीं होती, ये सिर्फ सूरत दिखाने आते हैं। ऐसे में एक दिन मैंने तय किया कि आज कोई भी आए, मैं आँख नहीं खोलूँगा। चुपचाप पड़ा रहूँगा। ऑफिस के बड़े बाबू आए और मुझे सोया जानकर बार-बार वापस जाने के बजाय वे सोचने लगे कि यदि मैंने उन्हें नहीं देखा तो कैसे पता चलेगा कि वे मिलने आए थे। अत: उन्होंने मुझे धीरे-धीरे हिलाना शुरू किया। फिर भी जब आँखे नहीं खुलीं तो उन्होंने मेरी टाँग के टूटे हिस्से को जोर से दबाया । मैंने दर्द के मारे कुछ चीखते हुए जब आँख खोली तो वे मुस्कराते हुए बोले- ''कहिए, अब दर्द कैसा है?''

मुहल्लेवाले अपनी फुरसत से आते हैं। उस दिन जब सोनाबाई अपने चार बच्चों के साथ आई तो मुझे लगा कि आज फिर कोई दुर्घटना होगी। आते ही उन्होंने मेरी ओर इशारा करते हुए बच्चों से कहा-''ये देखो चाचा जी!'' उनका अंदाज कुछ ऐसा था जैसे चिड़ियाघर दिखाते हुए बच्चों से कहा जाता है-''ये देखो बंदर।''

B.KUMAR'S ACADEMY

१. संजाल पूर्ण कीजिए । **२**

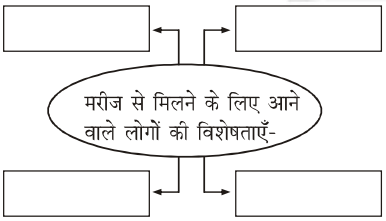

२. विधानों के सामने सत्य/असत्य लिखिए: **२**

१. मैंने तय किया कि आज मैं आँख ही नहीं खोलूँगा

२. ऑफिस के बड़े साहब आए ।

३. उन्होंने मेरी टाँग के टूटे हिस्से को जोर से दबाया

४. कहिए,अब सिरदर्द कैसा है?

३. i) निम्नलिखित शब्दों के लिंग पहचानकर लिखिए। १

अ) दिन - आ) नींद -

ii) निम्नलिखित शब्दोंके समानार्थी शब्द लिखिए : १

अ) नींद - आ) वक्त -

४. 'मरीज से मिलने जाते समय कौन-कौन-सी सावधानियाँ बरतनी चाहिए' इस विषय पर अपने विचार लिखिए । २

प्र २ रा अ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए । ६

चरित थे पूत, भुजा में शक्ति, नम्रता रही सदा संपन्न
हृदय के गौरव में था गर्व, किसी को देख न सके विपन्न ।
हमारे संचय में था दान, अतिथि थे सदा हमारे देव
वचन में सत्य, हृदय में तेज, प्रतिज्ञा में रहती थी टेव।
वही है रक्त, वही है देश, वही साहस है, वैसा ज्ञान
वही है शांति, वही है शक्ति, वही हम दिव्य आर्य संतान ।
जिएँ तो सदा इसी के लिए, यही अभिमान रहे यह हर्ष
निछावर कर दें हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारतवर्ष ।

१) उचित जोडियाँ मिलाइए : २

संचय	
सत्य	
अतिथि	
रत्न	
वचन	
दान	
हृदय	
तेज	
देव	

२. आकृति पूर्ण कीजिए : २

१. हम चरित्र के ऐसे थे - ☐
२. हम दान के लिए यह करते थे - ☐
३. हमारे लिए ये देवता के समान थे - ☐
४. हमें अपने गौरव पर यह था - ☐

३. निम्नलिखित दो पंक्तियों का भावार्थ लिखिए । २

हमारे संचय में था दान, अतिथि थे सदा हमारे देव वचन में सत्य, हृदय में तेज,प्रतिज्ञा में रहती थी टेव।

प्र ३रा १. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए : ३

१. कमर कसना २. राह देखना ३. ढाक के तीन पात

२. निम्नलिखित वाक्यों में यथास्थान विरामचिह्नों का प्रयोग कीजिए : ३

१. मैंने कराहते हुए पूछा मैं कहाँ हूँ
२. हे मेरे मित्रो परिचितों आओ अपने सारे बदले लेने का यही वक्त हैं ।
३. सो तो है कहते हुए करामत अली कुछ नहीं बोला

३. निम्नलिखित वाक्यों में आए हुए संज्ञा शब्दों को रेखांकित करके उनके भेद लिखिए । २

१. सोनाबाई अपने चार बच्चों के साथ आई ।
२. गाय बहुत दूध देती है।

* * *

B.KUMAR'S ACADEMY

विषय - हिंदी | **Unit Test - 02** | **गुण : ३०**

कक्षा - दसवीं | **गोवा जैसा मैने देखा, गिरीधर नागर, ए मन** | **समय : १ घंटा**

प्र.१ : अ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए। ८

यहाँ की शाम बड़ी अच्छी होती है तो चलो, इस शाम का आनंद लेने लिए बेनालियम बीच की ओर चलें । आप भी चलें क्योंकि बहुत ही खूबसूरत तथा शांत जगह है बेनालियम । दिन भर की थकान तथा उमस भरी गरमी के बाद शाम को बीच पर जाना बड़ा अच्छा लग रहा था । रिसॉर्ट से बीचकी दूरी कोई एक कि.मी. ही थी लेकिन जल्दी-जल्दी चलने के बाद भी यह दूरी तय हो ही नहीं पा रही थी । अरब सागर देखने का उत्साह बढ़ता ही जा रहा था । तभी अचानक लहरो की आवाज सुनाई दी जो किसी रणभेदी की तरह थी । हम सभी दौड़ पड़े । सड़क पीछे छूट गई थी इसलिए रेत पर तेजी से दौड़ना मुश्किल हो रहा था, फिर भी धँसे हुए पैरों को पूरी ताकत से उठा-उठाकर भाग रहे थे । खूबसूरत समुंदर देखते ही मैं उससे जाकर लिपट गया। इधर बच्चे रेत का घर बनाने में जुए गए । लहरें उनका घर गिरा देतीं तो वे दूसरी लहर आने के पहले फिर नया घर बनाने में जुट जाते । यही क्रम चलता रहा । मैंने इन बच्चोंसे सीखा कि जीवनमें आशावाद हो तो कोई काम असंभव नहीं है । शाम गहराने पर हम किनारे पर बैठ गए । मानों हर लहर कह रही हो कि बनने के बाद मिटना ही नियति है। यही जीवन का सत्य भी है।

यहाँ एक मजेदार दृश्य भी देखने को मिला । लहरों की आवाज के बीच पक्षियों की टीं-टीं-टीं की आवाज भी आपका ध्यान अपनी ओर खींच लेती है। दरअसल, ये पक्षी लहरों के साथ बहकर आई मछलियों का शिकार करने के लिए किनारे पर ही मँड़राते रहते हैं लेकिन जब तेज हवा के कारण एक ही दिशामें सीधे नहीं उड़ पाते हैं तो सुस्ताने के लिए किनारे पर बैठ जाते है। यहाँ बैठे कुत्तों को इसी बात का इंतजार रहता है।

१. सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए : २

१. गोवा की .....बड़ी अच्छी होती है । (सुबह /शाम/रात)
२. ..... देखने का उत्साह बढ़ता जारहा था । (अरब /हिंद /बंगाल)
३. यही..... का सत्य भी है । (लोगों /दुनिया / जीवन)
४. ..... सुस्ताने के लिए किनारे पर बैठ जाते है । (कुत्ते / पक्षी / लोग)

२. घटना के अनुसार वाक्यों का उचित क्रम लगाकर लिखिए । २

१. शाम गहराने पर हम किनारे पर बैठ गए ।
२. यहाँ एक मजेदार दृश्य भी देखने को मिला।
३. यहाँ बैठे कुत्तों को इसी बात का इंतजार रहता है ।
४. बच्चे रेत का घर बनाने में जूट गए ।

३. १. निम्नलिखित शब्दों का वचन बदलकर लिखिए : १

अ) मछली - आ) लहर -

२. निम्नलिखित शब्दों के लिंग पहचानकर लिखिए : **१**

अ) जीवन - आ) जगह -

३. गोवा की शाम के विषय में अपने विचार लिखिए । **२**

प्र २ रा निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गइ सूचना के अनुसार क़तियाँ कीजए :

हरि बिन कूण गती मेरी ।।
तुम मेरे प्रतिपाल कहिये मैं रावरी चेरी ।।
आदि-अंत निज नाँव तेरो हीमायें फेरी ।
बेर-बेर पुकार कहूँ प्रभु आरति है तेरी ।।
यौ संसार बिकार सागर बीच में घेरी ।
नाव फाटी प्रभु पाल बाँधो बूड़त है बेरी ।।
बिरहणि पिवकी बाट जौवै राखल्यो नेरी ।
दासी मीरा राम रटत है मैं सरण हूँ तेरी।

१. आकृति पूर्ण कीजिए : **२**

१. ये मीरा के प्रतिपालक हैं - [ ]
२. कृष्ण के बिना इनको कहीं आश्रय नहीं है - [ ]
३. मीरा को प्रभु से मिलने की तीव्र यह है - [ ]
४. मीरा की यह संसार सागर में डूबने वाली है - [ ]

२. पद्यांश में आए इस अर्थ के शब्द लिखिए : **२**

१. दासी २.आश्रय **३.**बार-बार **४.** नौका

३. उपर्युक्त पद्यांश की हरि बिन कूण ---------- आरति है तेरी ।।
इन पंक्तियों का सरल अर्थ लिखिए । **२**

प्र ३ रा अ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए : **४**

मुझे जीवन के सहज और खुले ढंग से जीना पसंद है। चीजों का लुका-छिपाकर, बातों और व्यवहारको रचा बसाकर जीना सख्त नापसंद है । वह चारित्रिक बेईमानी है, जिसे हम व्यवहार कुशलता का नाम देते हैं। इसके पीछे आत्मविश्वास की कमी झलकती है कि कहीं लोग हमारी असलियत को न जान जाएँ ।

आखिर वह असलियत इतनी गंदी और धूर्त क्यों हो कि उसे छिपाना जरूरी लगे । बुढ़ापे का केवल यही अर्थ नहीं कि जीवन के कुछ कम वर्ष बचे हैं; यह तथ्य तो जीवन के किसी खंड पर भी लागू हो सकता है - बचपन, यौवन बुढ़ापा...। खास बात है, जो भी वर्ष बचे हैं, जब जक जीवित और चैतन्य हूँ, जिंदगी को क्या अर्थ दे पाता हूँ, या अपने लिए उससे क्या पाता हूँ, ऐसा कुछ जिसका सबके लिए कोई महत्त्व है। लगभग इसी अर्थ में मैं साहित्यिक चेष्टा और जीवन चेष्टा को अपने लिए अविभाज्य पाता हूँ ।

७५ का हो रहा हूँ- यानी, जीने के लिए अब कुछ ही वर्ष बचे हैं लेकिन जीना बंद नहीं हो गया । यह अहसास कि मृत्यु बहुत दूर नहीं है, उम्र के किसी भी मोड़ पर हो सकती है । ऐसा हुआ भी है मेरे साथ तब हो या अब, यह सवाल अपनी जगह बना रहता है कि जीवन को किसी तरह जिया जाए- सार्थकता से अपने लिए यह दूसरों के लिए....।

१. १. कृति पूर्ण कीजिए : **१**

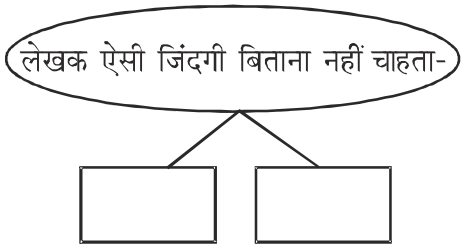

२. उत्तर लिखिए : **१**

लेखक को कैसा जीवन जीना पसंद है?

२. 'जीवन की सार्थकता' के विषय में अपने विचार लिखिए । **२**

आ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए । **४**

खारे जल से
धुल गए विषाद
मन पावन ।
मृत्यु को जीना
जीवन विष पीना
है जिजीविषा ।
मन की पीड़ा
छाई बन बादल
बरसी आँखे ।
चलतीं साथ
पटरियाँ रेल की
फिर भी मौन ।
सितारे छिपे
बादलों की ओट में
सूचना आकाश
तुमने दिए
जीन गीतों को स्वर
हुए अमर।
सागर में भी
रहकर मछली
प्यासी ही रही ।

१. उचित जोड़ियाँ मिलाइए : **२**

अ	**आ**
मछली	मौन
गीतों के स्वर	सूना
रेल की पटरियाँ	प्यासी
आकाश	अमर
	पीड़ा

२. 'आँखें देखने के अलावा और भी कई तरह के काम करती हैं' इस विषय पर अपने विचार स्पष्ट कीजिए : **२**

प्र ४ निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त कारक पहचानकर उनका भेद लिखिए : **३**

१. गोवा की मांडवी नदी वर्ष भर पानी से भरी रहती है ।
२. गोवा राज्य दो भागों में बँटा हुआ है ।
३. सबके अपने-अपने रिवाज हैं ।

प्र ५ पत्रलेखन **५**

निम्नलिखित जानकारी पर आधारित पत्र-लेखन कीजिए :

वक्तृत्व प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पाने के उपलक्ष्य में आपके मित्र/सहेली ने आपको बधाई - पत्र भेजा है, उसे धन्यवाद देते हुए निम्न प्रारूप में पत्र लिखिए :

***

B.KUMAR'S ACADEMY

B.KUMAR'S ACADEMY

विषय - हिंदी | **Unit Test - 03** | **गुण : ३०**

कक्षा - दसवीं | **रीढ़ की हड्डी, गजल, कृषक गान, ठेस** | **समय : १ घंटा**

प्र १ निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए : ८

रामस्वरूप	:	जवाब दो, उमा। (गोपाल से) हँ-हँ, जरा शरमाती है। इनाम तो इसने-
गो.प्रसाद	:	(जरा रूखी आवाज में) जरा इसे भी तो मुँह खोलना चाहिए ।
रामस्वरूप	:	उमा, देखो, आप क्या कह रहे हैं । जवाब दो न ।
उमा	:	(हल्की लेकिन मजबूत आवाज में) क्या जवाब दूँ बाबू जी! जब कुर्सी-मेज बिकती है तब दुकानदार कुर्सी-मेज से कुछ नहीं पूछता सिर्फ खरीददार को दिखाई देता है। पसंद आ गई तो अच्छा है, वरना-
रामस्वरूप	:	(चौंककर खड़े हो जाते हैं।) उमा, उमा!
उमा	:	अब मुझे कह लेने दीजिए बाबू जी ।
गो.प्रसाद	:	(ताव में आकर) बाबू रामस्वरूप, अपने मेरी इज्जत उतारने के लिए मुझे यहाँ बुलाया था?
शंकर	:	बाबू जी, चलिए ।
गो. प्रसाद	:	क्या तुम कॉलेज में पढ़ी हो ? (रामस्वरूप चुप)
उमा	:	जी हाँ, मैं कॉलेज में पढ़ी हूँ। मैंने बी.ए. पास किया है। कोई पाप नहीं किया, कोई चोरी नहीं की और न आपके पुत्र की तरह लड़कियों के होस्टल में ताक-झाँककर कायरता दिखाई है। मुझे अपनी इज्जत, अपने मान का खयाल तो है लेकिन इनसे पूछिए कि ये किस तरह नौकरानी के पैरों में पड़कर अपना मुँह छिपाकर भागे थे ।
रामस्वरूप	:	उमा, उमा!
गो. प्रसाद	:	(खड़े होकर गुस्से में) बस हो चुका । बाबू रामस्वरूप आपने मेरे साथ दगा किया। आपकी लड़की बी.ए. पास है और अपने मुझसे कहा था कि सिर्फ मैट्रिक तक पढ़ी है। (दरवाजे की ओर बढ़ते हैं)
उमा	:	जी हाँ, जाइए, जरूर चले जाइए ! लेकिन घर जाकर जरा यह पता लगाइएगा कि आपके लाड़ले बेटे के रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं-याने बैकबोन, बैकबोन ।

१. नीचे दिए गए शब्दों के आधार पर प्रश्न बनाइए : २

१. शंकर २. उमा ।

२. संजाल पूर्ण कीजिए : २

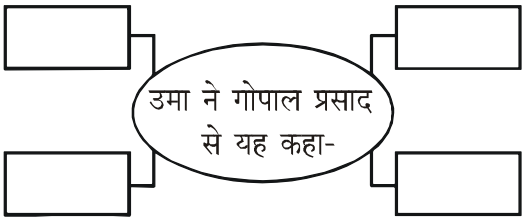

उमा ने गोपाल प्रसाद से यह कहा-

३. १) परिच्छेद में प्रयुक्त अंग्रेजी शब्द ढूँढकर लिखिए : १

अ) ———----- आ) -------

२. शब्दयुग्म पूर्ण कीजिए : १

अ) सीधा ------- आ) नाप -------

४. उमा को गोपाल प्रसाद की किन बातों पर गुस्सा आया? क्या वह उचित था ? इस विषय पर अपने विचार लिखिए । २

प्र २ रा अ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए : ६

हाथ में संतोष की तलवार ले जो उड़ रहा है,
जगत में मधुमास, उसपर सदा पतझर रहा है,
दीनता अभिमान जिसका, आज उसपर मान कर लूँ।
उस कृषक का गान कर लूँ ।।
चूसकर श्रम रक्त जिसका, जगत में मधुरस बनाया,
एक-सी जिसको बनाई, सृजक ने भी धूप-छाया,
मनुजता के ध्वज तले, आह्वान उसका आज कर लूँ ।
उस कृषक का गान कर लूँ ।।
विश्व का पालक बन जो, अमर उसको कर रहा है,
किंतु अपने पालितों के, पद दलित हो मर रहा है,
आज उससे कर मिला, नव सृष्टि का निर्माण कर लूँ।
उस कृषक का मान कर लूँ।।

१. आकृति पूर्ण कीजिए : २

१. कृषक इन स्थितियों में अविचल रहता है-

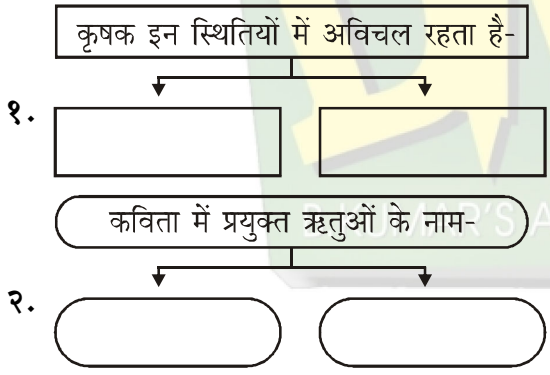

२. कविता में प्रयुक्त ऋतुओं के नाम-

२. सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए : २

१. कृषक हाथ में ---- की तलवार लेकर चल रहा है । (श्रम / संतोष / धन)
२. सारे संसार में --- और उस पर सदा पतझड़ रहता है । (वसंत / वर्षा / फूल)
३. कृषक को अपनी-------- पर अभिमान है । (मेहनत / गरीबी / दीनता)
४. उसके लिए --- और छाया एक जैसी है । (धूप/ रोशरी / कालिमा)

३. पद्यांश की प्रथम चार पंक्तियों का भावार्थ लिखिए । २

आ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए : ६

एक जुगनू ने कहा मैं भी तुम्हारे साथ हूँ,
वक्त की इस धुंध में तुम रोशनी बनकर दिखो ।
एक मर्यादा बनी है हम सभी के वास्ते,
गर तुम्हें बनना है मोती सीप के अंदर दिखों ।
डर जाए फूल बनने से कोई नाजुक कली,
तुम ना खिलते फूल पर तितली के टूटे पर दिखों।
कोई ऐसी शक्ल तो मुझको दिखे इस भीड़ में,
मैं जिसे देखूँ उसी में तुम मुझे अक्सर दिखो।

१. आकृति पूर्ण कीजिए : २

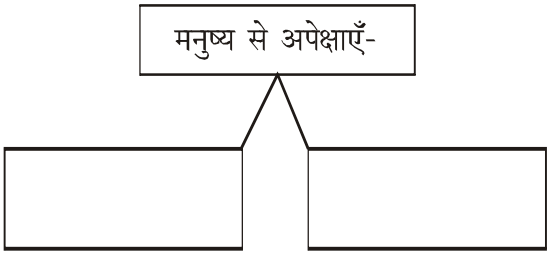

२. जिनके उत्तर निम्न शब्द हों, ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए :

अ) भीड़ - ब) जुगनू -

२. निम्नलिखित पंक्तियों से प्राप्त जीवनमूल्य लिखिए : २

१. एक जुगनू ने ----------रोशनी बनकर दिखो।
२. कोई ऐसी शक्ल ---------- मुझे अक्सर दिखो।

३. उपर्युक्त पद्यांश की प्रथम चार पंक्तियों का भावार्थ लिखिए । २

प्र ३ अ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए : ४

खेती-बारी के समय, गाँव के किसान सिरचन की गिनती नहीं करते। लोग उसको बेकार ही नहीं, 'बेगार' समझते हैं। इसलिए खेत-खलिहान की मजदूरी के लिए कोई नहीं बुलाने जाता है सिरचन को । क्या होगा, उसको बुलाकर ? दूसरे मजदूर खेत पहुँचकर एक-तिहाई काम कर चुकेंगे, तब कहीं सिरचन राय हाथ में खुरपी डुलाता हुआ दिखाई पड़ेगा; पगडंडी पर तौल-तौलकर पाँव रखता हुआ, धीरे-धीरे । मुफ्त में मजदूरी देनी हो तो और बात है ।

आज सिरचन को मुफ्तखोर, कामचोर या चटोर कह ले कोई । एक समय था, जब उसकी मड़ैया के पास बाबू लोगों की सवारियाँ बँधी रहती थीं। उसे लोग पूछते ही नहीं थे, उसकी खुशामद भी करते थे । ''अरे, सिरचन भाई! अब तो तुम्हारे ही हाथ में यह कारीगरी रह गई है और सारे इलाके में एक दिन का समय निकालकर चलो। बडे भैया की चिट्ठी आई है शहर से- सिरचन से एक जोड़ा चिक बनाकर भेज दो ।''

मुझे याद है.. मेरी माँ जब कभी सिरचन को बुलाने के लिए कहती, मैं पहले ही पूछ लेता,''भोग क्या-क्या लगेगा?''

माँ हँसकर कहतीं, ''जा-जा बेचारा मेरे काम में पूजा-भोग की बात नहीं उठाता कभी।'' पड़ोसी गॉव के पंचानंद चौधरी के छोटे लड़के को एक बार मेरे सामने ही बेपानी कर दिया था सिरचन ने- ''तुम्हारी भाभी नाखून से खाँटकर तरकारी परोसती है और इमली का रस डालकर कढ़ी तो हम मामूली लोगों की घरवालियाँ बनाती हैं। तुम्हारी भाभी ने कहाँ से बनाना सीखी हैं।''

१. संजाल पूर्ण कीजिए : २

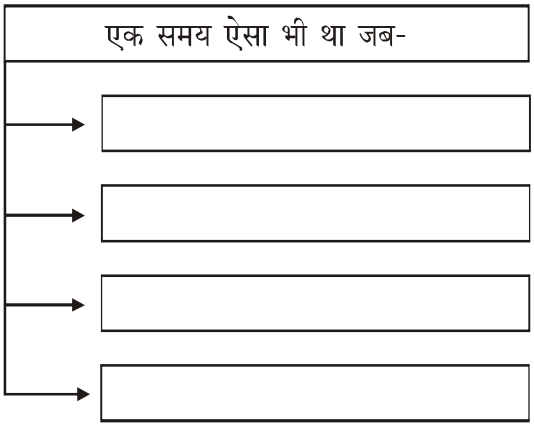

२. **'खेत-खलिहान की मजदूरी' इस विषय में अपने विचार लिखिए ।** २

प्र ४ निम्नलिखित वाक्यों में आए हुए अव्ययों को रेखाकिंत कीजिए और उनके भेद लिखिए । १

१. गाय को घर के सामने खूँटे से बाँधा ।

अव्यय -

भेद -

प्र ५ अपने परिसर में विद्यार्थियों के लिए 'योगसाधना शिविर' का आयोजन करने हेतु आयोजक के नाते विज्ञापन तैयार कीजिए । ५

****

B.KUMAR'S ACADEMY

B.KUMAR'S ACADEMY

विषय - हिंदी | **Unit Test - 04** | **गुण : ३०**

कक्षा - दसवीं | **बरषहिं जलद, दो लघुकथाएँ, श्रम साधना** | **समय : १ घंटा**

प्र १ निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए : ८

हमारी सामाजिक विचारधारा में एक बड़ा भारी दोष है। हम शरीर श्रम करना नहीं चाहते वरना उसे हीन दृष्टि से देखते हैं और जिनको शरीर श्रम करना पड़ता है, उन्हें समाज में हीन दर्जे का मानते हैं। अमीर या गरीब, कोई भी श्रम करना नहीं चाहता। धनिक अपने पैसे के बल से नौकरों द्वारा अपनाकाम चला लेता है। गरीब भूख की लाचारी से श्रम करता है। हमें यह वृत्ति बदलनी चाहिए। शरीर श्रम की केवल प्रतिष्ठा स्थापित कर संतोष नहीं मानना है। उसके लिए हमारे दिल में प्रीति होनी चाहिए। आज श्रमिक भी कर्तव्य परायण नहीं रहा है। श्रम की प्रतिष्ठा बढ़ाना उसी के हाथ है। जिस श्रम में समाज को जिंदा रखने की क्षमता है, उस श्रम का सही मूल्य अगर श्रमिक जान लेगा तो देश में आर्थिक क्रांति होने में देर नहीं लगेगा।

गांधीजी ने श्रम और श्रमिक की प्रतिष्ठा स्थापित करने के लिए ही रचनात्मक कार्यों को लोक चेतना का माध्यम बनाया । उनकी मान्यता के अनुसार हरेक को नित्य उत्पादक श्रम करना ही चाहिए। यह उन्होंने श्रम और श्रमिक की प्रतिष्ठा कायम करने के लिए किया।

अब कुछ समय से जगत के सामने दया की जगह समता का विचार आया है। यह विषमत कैसे दूर हो? कहीं-कहीं लोगों ने हिंसा का मार्ग ग्रहण किया उसमें अनेक बुराइयाँ निकलीं जो अब तक दूर नहीं हो सकी हैं। विषमता दूर करने में कानून भी कुछ मदद देता है परंतु कानून से मानवोचित गुणों का, सद्भावना का विकास नहीं हो सकता। महात्मा जी ने हमें जो अंहिसा की विचारधारा दी है, उसके प्रभाव का कुछ अनुभव भी हम कर चुके हैं। भारत की परंपरा का खयाल करते हुए यह संभव दीखता है कि विषमता का प्रश्न बहुत कुछ हद तक अंहिसा के इस मार्ग से हल हो सकना संभव है। इसमें धनिकों से पूरा सहयोग मिलना चाहिए। जैसे राजनीतिक स्वराज्य का प्रश्न काफी हद तक अहिंसा के मार्ग से सुलझा वैसे ही आर्थिक और सामाजिक समता का प्रश्न भी भारत में अंहिसा के मार्ग से सुलझेगा, ऐसा हम श्रध्दा रखें ।

१. आकृति पूर्ण कीजिए : २

१.

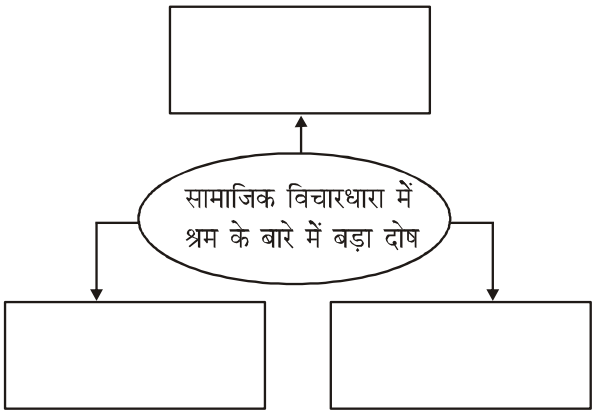

२.

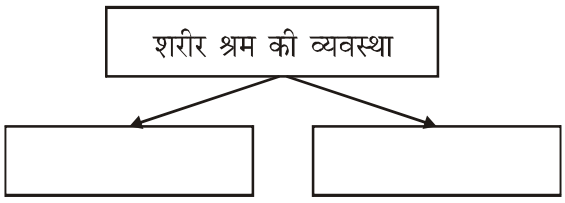

२. आकृति पूर्ण कीजिए : २

१. गांधीजी की मान्यता के अनुसार हर व्यक्ति को यह करना चाहिए -

२. अब कुछ समय से जगत के सामने दया की जगह यह विचार आया है-

३. महात्माजी द्वारा दी गई प्रसिद्ध विचारधारा -

४. अंहिसा के मार्ग से यह प्रश्न हल हो सकता है -

३. १) निम्नलिखित शब्दों के वचन पहचान कर लिखिए : १

अ) बच्चा - आ) विषमताएँ -

२. पाठ में प्रयुक्त 'इक' प्रत्यययुक्त शब्दों को ढूँढकर लिखिए : १

अ) --------- आ) --------

४. 'शारीरिक श्रम स्वाथ्य के लिए अति उत्तम' विषय पर अपने विचार लिखिए : २

प्र २ निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनूसार कृतियाँ कीजिए : ६

दादुर धुनि चहुँ दिसा सुहाई । बेद पढ़हिं जनु बटु समुदाई ।
नव पल्लव भए बिटप अनेका । साधक मन जस मिले बिबेका ।।
अर्क-जवास पात बिनु भयउ। जस सुराज खल उद्यम गयऊ।
खोजत कितहुँ मिलइ नहिं धूरी । करइ क्रोध जिमि धरमहिं दूरी ।
ससि संपन्न सोह महि कैसी। उपकारी कै संपति जैसी ।।
निसि तम घन खद्योत बिराजा । जनु दंभिन्ह कर मिला समाजा ।।
कृषी निरावहिं चतुर किसाना । जिमि बुध तजहिं मोह-मद-माना।।
देखिअत चक्रबाक खग नाहीं । कलिहिं पाइ जिमि धर्म पराहीं ।।
विविध जंतु संकुल महि भ्राजा । प्रजा बाढ़ जिमि पाई सुराजा ।।
जहँ-तहँ रहे पथिक थकि नाना । जिमि इंद्रिय गन उपजे ग्याना ।।
कबहुँ प्रबल बह मारुत, जहँ-तहँ मेघ बिलाहिं ।
जिमि कपूत के उपजे, कुल सद्धर्म नसाहिं ।।
कबहुँ दिवस महँ निबिड़ तम, कबहुँक प्रगट पतंग ।
बिनसई-उपजइ ग्यान जिमि, पाइ कुसंग-सुसंग ।।

B KUMAR'S ACADEMY

१. उत्तर लिखिए : २

१. रात के अंधकार में जुगनू -

२. ससि (अनाज) से भरपूर धरती -

३. कृषि को निराने वाले किसान -

४. दिखाई न देने वाला चक्रवात -

२. तालिका पूर्ण कीजिए : २

A-1, Ground Floor, Green Park Building Shastri Nagar, near Indian Overseas Bank,
Vasai West, Vasai-Virar, Maharashtra 401202 +91 9619619937, 0250-2334511

	इन्हें	यह कहा है
i)	----------	बटु समुदाय
ii)	(नव पल्लव वाले) वृक्ष	----------
iii)	(लुप्त हुई) धूल	----------
iv)	----------	ज्ञान उत्पन्न हुआ

३. उपर्युक्त पद्यांश की प्रथम चार पंक्तियों का भावार्थ लिखिए : २

प्र ३ निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए : ४

अब तक वह कितने ही स्थानो पर नौकरी के लिए आवेदन कर चुका था। साक्षात्कार दे चुका था। उसके प्रमाणपत्रों की फाइल भी उसे सफलता दिलाने में नाकामयाब रही थी । हर जगह भ्रष्टाचार, रिश्वत का बोल बाला होने के कारण, योग्यता के बावजूद उसका चयन नहीं हो पाता था। हर ओर से अब वह निराश हो चुका था। भ्रष्ट सामाजिक व्यवस्था को कोसने के आलवा उसके वश में और कुछ तो था नहीं।

आज फिर उसे साक्षात्कार के लिए जाना है। अब तक देशप्रेम, नैतिकता, शिष्टाचार, ईमानदारी पर अपने तर्कपूर्ण विचार बड़े विश्वास से रखता आया था लेकिन इसके बावजूद उसके हिस्से में सिर्फ असफलता ही आई थी।

साक्षात्कार के लिए उपस्थित प्रतिनिधि मंडल में से एक अधिकारी ने पूछा - ''भ्रष्टाचार के बारे में आपकी क्या राय है?''

''भ्रष्टाचार एक ऐसा कीड़ा है जो देश को घुन की तरह खा रहा है। इसने सारी सामाजिक व्यवस्था को चिंताजनक स्थिति में पहुँचा दिया है । सच कहा जाए तो यह देश के लिए कलंक है...।'' अधिकारियों के चेहरे पर हलकी-मुस्कराहट और उत्सुकता छा गई। उसके तर्क में उन्हें रूचि महसूस होने लगी। दूसरे अधिकारी ने प्रश्न किया- ''रिश्वत को आप क्या मानते हैं?''

''यह भ्रष्टाचार की बहन है जैसे विशेष अवसरों पर अपने प्रियजनों, परिचितों, मित्रों को उपहार देते हैं। इसका स्वरूप भी कुछ-कुछ वैसा ही है लेकिन उपहार देकर हम केवल खुशियों का कर्तव्यों का आदान-प्रदान करते हैं। इससे अधिक कुछ नहीं जबकि रिश्वत देने से रुके हुए कार्य, दबी हुई फाइलें, टलती हुई पदोन्नति, रोकी गई नौकरी आदि में इसके कारण सफलता हासिल की जा सकती है। तब भी यह समाज के माथे पर कलंक है, इसका समर्थन कतई नहीं किया जा सकता, ऐसी मेरी धारणा है।'' कहकर वह तेजी से बाहर निकल आया। जानता था कि यहाँ भी चयन नहीं होगा।

पर भीतर बैठे अधिकारियों ने... गंभीर से विचार-विमर्श करने के बाद युवक के सही उत्तर की दाद देते हुए उसका चयन कर लिया। आज वह समझा कि 'सत्य कुछ समय के लिए निराश हो सकता है, परास्त नहीं।'

१. संजाल पूर्ण कीजिए : २

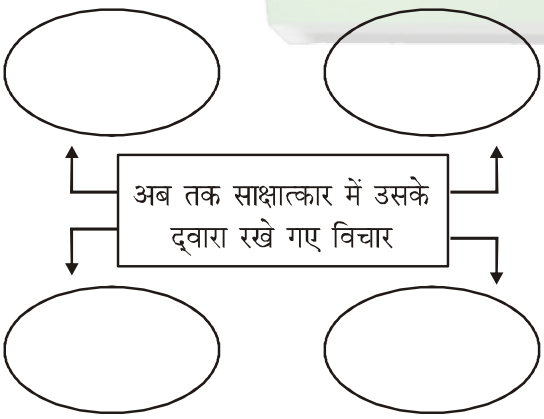

B.KUMAR'S ACADEMY

३. भ्रष्टाचार एक कलंक 'विषय पर अपने विचार लिखिए । **२**

प्र ४ १. अर्थ के अनुसार वाक्य के भेद लिखिए :

१. क्या वह गंभीर बुनियादी सवाल है?

२. अरे! बिना श्रम काम थोड़े ही होगा ।

२. रचना के अनुसार वाक्यों के भेद लिखिए :

१. बादल गरज रहे हैं और बिजली चमक रही है ।

२. अनेक वृक्षों में नई-नई कोंपले आ गई हैं, जिससे वे हरे-भरे तथा सुशोभित हो गए हैं।

३. निम्नलिखित वाक्यों का सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए : **३**

१. बहुत से लोग अपनी आजीविका शरीर श्रम से चलाते हैं । (अपूर्ण भूतकाल)

२. जिनके पास संपत्ति है, वे आराम से रह रहे हैं । (सामान भविष्यकाल)

३. प्रियाहीन मेरा मन डरता है। (पूर्ण वर्तमानकाल)

प्र ५ निम्नलिखित शब्दों के आधार पर कहानी लिखिए : **५**

(मिट्टी, चाँद, खरगोश, कागज)

****

B.KUMAR'S ACADEMY

B.KUMAR'S ACADEMY

Unit Test - 05

विषय - हिंदी | **छापा, ईमानदारी की प्रतिमूर्ति,** | **गुण : ३०**

कक्षा - दसवीं | **हम इस धरती की संतति है, महिला आश्रम** | **समय : १ घंटा**

प्र १ अ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए : ८

हमने अपने जीवन में बाबू जी के रहते अभाव नहीं देखा। उनके न रहने के बाद जो कुछ मुझपर बीता, वह एक दूसरी तरह का अभाव था कि मुझे बैंक की नौकरी करनी पड़ी। लेकिन उससे पूर्व बाबू जी के रहते मैं जब जन्मा था तब वे उत्तर प्रदेश में पुलिस मंत्री थे। उस समय गृहमंत्री को पुलिस मंत्री कहा जाता था । इसलिए मैं हमेशा कल्पना किया करता था कि हमारे पास ये छोटी गाड़ी नहीं बड़ी आलीशान गाड़ी होनी चाहिए । बाबू जी प्रधानमंत्री हुए तो वहाँ जो गाड़ी थी वह थी, इंपाला शेवरलेट। उसे देख-देख बड़ा जी करता कि मौका मिले और उसे चलाऊँ । प्रधानमंत्री का लड़का था । कोई मामूली बात नहीं थी । सोचते-विचारते, कल्पना की उड़ान भरते एक दिन मौका मिल गया । धीरे-धीरे हिम्मत भी खुल गई थी ऑर्डर देने की । हमने बाबू जी के निजी सचिव से कहा -"सहाय साहब, जरा ड्राइवर से कहिए, इंपाला लेकर रेजिडेंस की तरफ आ जाएँ।" दो मिनट में गाड़ी आकर दरवाजे पर लग गई। अनिल भैया ने कहा - "मैं तो इसे चलाऊँगा नहीं। तुम्हीं चलाओ।"

मैं आगे बढ़ा। ड्राइवर से चाभी माँगी। बोला -"तुम बैठो, आराम करो, हम लोग वापस आते हैं अभी।' गाड़ी ले हम चल पड़े। क्या शान की सवारी थी । याद कर बदल में झुरझुरी आने लगी है । जिसके यहाँ खाना था, वहाँ पहुँचा । बातचीत में समय का ध्यान नहीं रहा । देर हो गई । याद आया बाबू जी आ गए होंगे।

वापस घर आ फाटक से पहले गाड़ी रोक दी। उतरकर गेट तक आया । संतरी को हिदायत दी। यह सैलूट-वैलूट नहीं, बस धीरे से गेट खोल दो। वह आवाज करे तो बंद मत करो, खुला छोड़ दो।

बाबू जी का डर। वह खट-पट-सैलूट मारेगा तो आवाज होगी और फिर से गेट की आवाज से बाबू जी को हम लोगों के लौटने का अंदाज हो जाएगा । वे बेकार में पूछताछ करेंगे। अभी बात ताजा है। सुबह तक बात में पानी पड़ चुका होगा । संतरी से जैसा कहा गया, उसने किया। दबे पैर पीछे किचन के दरवाजे से अंदर घुसा जाते ही अम्मा मिलीं ।

१. संजाल पूर्ण कीजिए : २

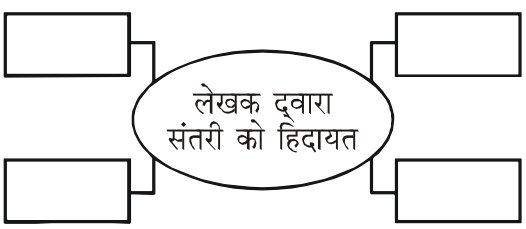

२. उत्तर लिखिए : २

१. लेखक को इस बात का गर्व था -

२. लेखक ने संतरी को सैलूट मारने से रोका -

३. १. निम्नलिखित शब्दों के लिंग पहचान कर लिखिए : **१**

अ) पुलिस - आ) संतरी -

२. परिच्छेद में आए अंग्रेजी शब्द खोजकर लिखिए : **१**

अ) -------- आ) ---------

४. 'बच्चों की कल्पनाएँ और माता-पिता का डर' विषय पर अपने विचार लिखिए । **२**

आ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए । **८**

संस्था चलाने का भार तो आने वाली बहनें ही उठा सकेंगी क्योंकि उनमें कई तो कुशल होंगी। बहन उनको संगीत की, भक्ति की तथा प्रेमयुक्त सलाह की खुराक दें। आगे चलकर संस्था की जमीन पर छोटे-छोटे मकान बनाए जाएँगे और उसमें संस्था के नियम के अधीन रहकर आने वाली महिलाएँ दो-दो, चार-चार का परिवार चलाएँगी, ऐसी संस्थाएँ मैंने देखी हैं । इसलिए जो बिलकुल संभव है, बहुत ही उपयोगी है। ऐसा ही काम मैंने सूचित किया है, इतने वर्ष के बहन के परिचय के बाद उनकी शक्ति, कुशलता और उनकी मर्यादा का ख्याल मुझे है। प्रत्यक्ष कोई हिस्सा लिए बिना मेरी सलाह और सहारा तो रहेगा ही। आगे जाकर बहन को लगेगा कि उनको तो मात्र निमित्तमात्र होना था। संस्था अपने आप चलेगी। समाज में ऐसी संस्था की अत्यंत आवश्यकता है। उस आवश्यकता में से ही उसका जन्म होगा। मुझे इतना विश्वास न होता तो बहन के लिए ऐसा कुछ मैं सूचित ही नहीं करता । तुम दोनों इस सूचना का प्रार्थनापूर्वक विचार करना लेकिन जल्दी में कुछ तय न करके यथासमय मुझे उत्तर देना । बहन यदि हाँ कहे तो अभी से आगे का विचार करने लगूँगा।

यहाँ सरदी अच्छी है। फूलों में गुलदाउदी, क्रिजेन्थीमम फूल बहार में हैं। उनकी कलियाँ महीनों तक खूलती ही नहीं मानो भारी रहस्य की बात पेट में भर दी हो और होठों को सीकर बैठ गई हों। जब खिलती हैं तब भी एक-एक पंखुड़ी करके खिलती हैं। वे टिकते हैं बहुत।

१. आकृति पूर्ण कीजिए : **२**

१.

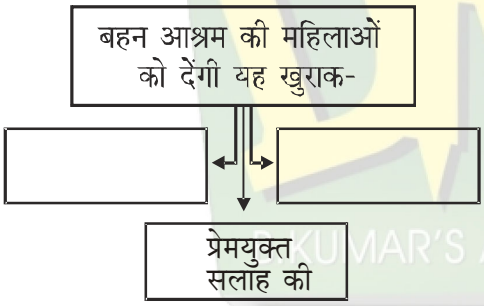

२.

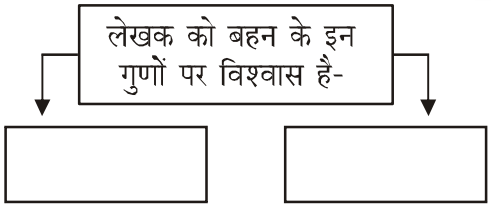

२. संजाल पूर्ण कीजिए : **२**

A-1, Ground Floor, Green Park Building Shastri Nagar, near Indian Overseas Bank, Vasai West, Vasai-Virar, Maharashtra 401202 +91 9619619937, 0250-2334511

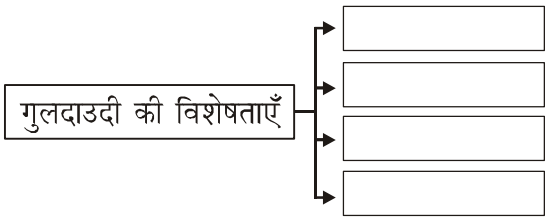

३. १. निम्नलिखित शब्दों के वचन बदल कर लिखिए : **१**

अ) बहनें - आ) संस्था -

२. निम्नलिखित शब्दों के लिंग पहचानकर लिखिए : **१**

अ) संगीत - आ) समाज -

४. 'आश्रमों की व्यवस्था के बारे में अपने विचार लिखिए । **२**

प्र २ निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कजिए : **६**

मेरे घर छापा पड़ा, छोटा नहीं बहुत बड़ा
वे आए, घर में घुसे, और बोले-सोना कहाँ है?
मैंने कहा- मेरी आँखें में है, कई रात से नहीं सोया हूँ
वे रोष में आकर बोले-स्वर्ण दो स्वर्ण!
मैंने जोश में आकर कहा-सुवर्ण मैंने अपने काव्य में बिखेरे हैं
उन्हें कैसे दे दूँ।
वे झुँझलाकर बोले, तुम समझे नहीं
हमें तुम्हारा अनधिकृत रूप से अर्जित अर्थ चाहिए
मैं मुसकाकर बोला, अर्थ मेरी नई कविताओं में है
तुम्हें मिल जाए तो ढूँढ़ लो
वे कड़ककर बोला- चाँदी कहाँ है?
मैं भड़ककर बोला- मेरे बालों में आ रही है धीरे-धीरे
वे उद्‌भ्रांत होकर बोले,
यह बताओ तुम्हारे नोट कहाँ है?
परीक्षा से एक महीने पहले करूँगा तैयार

१. संजाल पूर्ण कीजिए : **२**

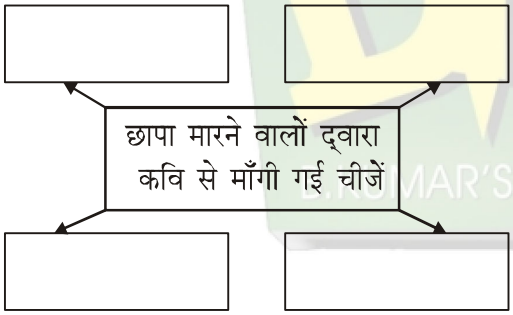

२. जोडियाँ मिलाइए: **२**

	अ	ब
i)	अर्थ	बालों में
ii)	सुवर्ण	चेहरे पर
iii)	चाँदी	नई कविता में
iv)	मुद्रा	काव्य कृतियों में

A-1, Ground Floor, Green Park Building Shastri Nagar, near Indian Overseas Bank,
Vasai West, Vasai-Virar, Maharashtra 401202 +91 9619619937, 0250-2334511

३. पद्यांश की पंक्तियों -' वे कड़ककर बोले पहले करूँगा तैयार' का भावार्थ लिखिए । २

प्र ३ निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए । ४

यों आप खफा क्यों होती हैं, टंटा काहे का आपस में ।
हमसे तुम या तुमसे हम बढ़-चढ़कर क्या रक्खा इसमें।
झगड़े से न कुछ हासिल होगा, रख देंगे बातें उलझ के।
बस बात पते की इतनी है, ध्रुव या रजिया भारत माँ के।
भारत माता के रथ के हैं हम दोनों ही दो-दो पहिये, अजी दो पहिये, हाँ दो पहिये।
हम उस धरती की संतति हैं....

१. आकृति पूर्ण कीजिए : २

i) भारत माता के रथ के दो पहिए-

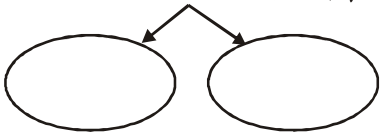

ii) इनसे ये बढ़-चढ़कर नहीं-

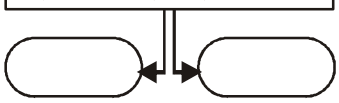

२. 'स्त्री-पुरूष समानता' के बारे में अपने विचार लिखिए । २

प्र ४ १. निम्नलिखित वाक्यों में विरामचिह्नों का प्रयोग कीजिए : २

१. संस्था की जमीन पर छोटे छोटे मकान बनाए जाएँगे
२. फूलों में गुलदाऊदी क्रिजेन्थीअम फूल बहार में हैं

२. निम्नलिखित वाक्य शुद्ध करके लिखिए : २

१. वे बोले, मैं मेरा काम कर रहे हैं ।
२. इस घर में अनेकों खाली पीपी हैं ।

***

B.KUMAR'S ACADEMY

B.KUMAR'S ACADEMY

Unit Test - 06

विषय - हिंदी | **जब तक जिंदा रहूँ, लिखता रहूँ, बूढ़ी काकी,** | **गुण : ३०**

कक्षा - दसवीं | **समता की ओर, अपनी गंध नहीं बेचूँगा** | **समय : १ घंटा**

प्र १ निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए : ८

तिवारी जी : नागर जी, आप अपने समय के और कौन-कौन से लेखकों के संपर्क-प्रभाव में रहे?

नागरजी : जगन्नाथदास रत्नाकर, गोपाल राय गहमरी, प्रेमचंद, किशोरी लाल गोस्वामी,लक्ष्मीधर वाजपेयी आदि के नाम याद आते हैं। माधव शुक्ल हमारे यहाँ आते थे । वे आजानुबाहु थे, ढीला कुरता पहनते थे और कुरते की जेब में जलियाँवाला बाग की खून सनी मिट्टी हमेशा रखे रहते थे । १९३१ से ३७ तक मैं प्रतिवर्ष कोलकाता जाकर शरतचंद्र से मिलता रहा, उनके गाँव भी गया।

तिवारी जी : पुराने साहित्यकारों में आप किसको अपना आदर्श मानते हैं ?

नागर जी : तुलसीदास को तो मुझे घुट्टी में पिलाया गया है। बाबा, शाम को नित्य प्रति 'रामचरितमानस' मुझसे पढ़वाकर सुनते थे। श्लोक जबरदस्ती याद करवाते थे ।

तिवारी जी : नागर जी, आपने 'खंजन नयन' में सूरदास के चमत्कारों का बहुत विस्तार से वर्णन किया है। क्या इनपर आपका विश्वास है?

नागर जी : नेत्रहीनों के चमत्कार हमने बहुत देखे हैं। उनकी भविष्यवाणियाँ कभी-कभी बहुत सच होती हैं। सूरपंचशती के अवसर पर काफी विवाद चला था कि सूर जन्मांध थे या नहीं। सवाल यह है कि देखता कौन है? आँख या मन? आँख माध्यम है, देखने वाला मन है।

तिवारी जी : आपने क्या कभी अपने लिखने की सार्थकता की परख की है।

नागर जी : हाँ मेरे पास बहुत से पत्र आते हैं। मेरे उपन्यासों के बारे में, खास तौर से जिनसे पाठकीय प्रतिक्रियाओं का पता चलता है।

तिवारी जी : नागर जी, आपने भ्रमण तो काफी किया है...

नागर जी : हाँ पूरे अखंड भारतवर्ष का । पेशावर कन्याकुमारी तक। बंगाल से कश्मीर तक । इन यात्राओं का यह लाभ हुआ कि मैंने कैरेक्टर (चरित्र) बहुत देखे और उनके मनोविज्ञान को भी समझने का मौका मिला ।

१. संजाल पूर्ण कीजिए : २

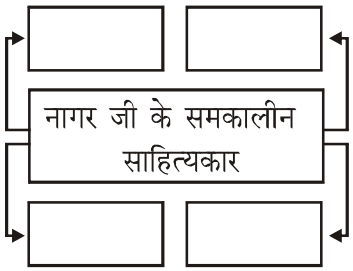

२. आकृति पूर्ण कीजिए: २

१. नागर जी ने अपने इस कृति से सूरदास के चमत्कारों का वर्णन किया है -

२. नेत्रहीनों के चमत्कार के बारे में नागर जी की धारण -

३. नागर जी सात साल तक प्रतिवर्ष जिस लेखक से एक शहर में मिलते रहे -

४. नागर जी के प्रिय आलोचक -

३. i) निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए : १

अ) नयन = आ) पुराना =

ii) निम्नलिखित कृदंत शब्दों के मूलशब्द लिखिए : १

अ) खिंचाव - आ) लिखावट -

४. 'आँख देखने का माध्यम है, देखने वाला मन है' विषय पर आने विचार व्यक्त कीजिए । २

प्र २ अ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए । ६

बीत गया हेमंत भ्रात, शिशिर ऋतु आई !
प्रकृति हुई द्युतिहीन, अवनि में कुंझटिका है छाई।
पड़ता खूब तुषार पद्मदल तालों में बिलखाते,
अन्यायी नृप के दंडों से यथा लोग दुख पाते ।
निशा काल में लोग घरों में निज-निज जा सोते हैं,
बाहर श्वान, स्यार चिल्लाकर बार-बार रोते हैं।

१. १.कृति पूर्ण कीजिए : १

२. एक शब्द में उत्तर लिखिए: १

अ) पद्यांश में आए एक फूल का नाम -

ब) शिशिर ऋतु से पहले आने वाली ऋतु -

२. आकृति पूर्ण कीजिए : २

i)

ii)

३. प्रस्तुत पद्यांश की किन्हीं दो पंक्तियों का भावार्थ लिखिए : २

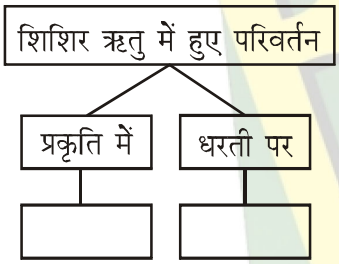

आ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए । ६

मुझको मेरा अंत पता है पँखुरी-पँखुरी झर जाऊँगा
लेकिन पहिले पवन परी संग एक-एक के घर जाऊँगा

B KUMAR'S ACADEMY

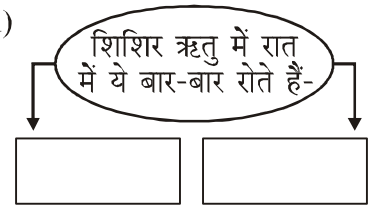

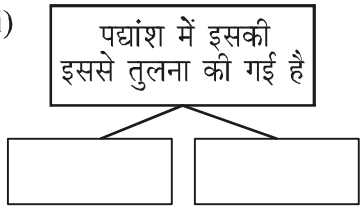

A-1, Ground Floor, Green Park Building Shastri Nagar, near Indian Overseas Bank,
Vasai West, Vasai-Virar, Maharashtra 401202 **+91 9619619937, 0250-2334511**

भूल-चूक की माफी लेगी सबसे मेरी गंध कुमारी
उस दिन ये मंडी समझेगी किसको कहते हैं खुद्दारी
बिकने से बेहतर मर जाऊँ अपनी माटी में झर जाऊँ
मन ने तन पर लगा दिया जो वो प्रतिबंध नहीं बेचूँगा ।

१. १. आकृति पूर्ण कीजिए : **१**

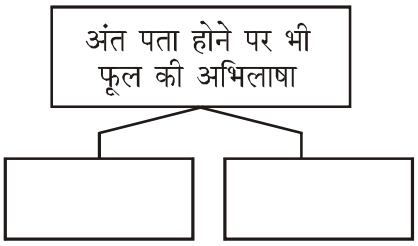

२. दो ऐसे प्रश्न बनाकर लिखिए, जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों : **१**

अ) मन ने आ) पवन के

२. आकृति पूर्ण कीजिए : **२**

१. फूल इस तरह झर जाएगा -
२. भूल-चूक की माफी यह लेगी -
३. तब मंडी यह समझेगी -
४. इसको इसका अंत पता है -

३. प्रस्तुत पद्यांश का भावार्थ लिखिए । **२**

प्र ३ निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए । **४**

रात का समय था । बुद्धिराम के द्वार पर शहनाई बज रही थी और गाँव के बच्चों का झुंड विस्मयपूर्ण नेत्रों से गाने का रसास्वादन कर रहा था । चारपाइयों पर मेहमान विश्राम कर रहे थे। दो-एक अंग्रेजी पढ़े हुए नवयुवक इन व्यवहारों से उदासीन थे । वे इस गँवार मंडली में बोलना अथवा सम्मिलित होना अपनी प्रतिष्ठा के प्रतिकूल समझते थे ।

आज बुद्धिराम के बड़े लड़के मुखराम का तिलक आया था यह उसी का उत्सव था । घर के भीतर स्त्रियाँ गा रही थीं और रूपा मेहमानों के लिए भोजन के प्रबंध में व्यस्त थी । भट्ठियों पर कड़ाह चढ़ रहे थे । एक में पूड़ियाँ-कचौड़ियाँ निकल रही थीं, दूसरे में अन्य पकवान बन रहे थे। एक बड़े हंडे में मसालेदार तरकारी पक रही थी। घी और मसाले की क्षुधावर्धक सुगंध चारों ओर फैली हुई थी।

बूढ़ी काकी अपनी कोठरी में शोकमय विचार की भाँति बैठी हुई थीं। यह स्वाद मिश्रितसुगंध उन्हें बेचैन कर रही थी।

'आह! कैसी सुगंध है? अब मुझे कौन पूछता है? जब रोटियों ही के लाले पड़े हैं तब ऐसे भाग्य कहाँ कि भरपूर पूड़ियाँ मिलें?' यह विचार कर उन्हें रोना आया, कलेजे में हूक-सी उठने लगी परंतु रूपा के भय से उन्होंने फिर मौन धारण कर लिया ।

फूल हम घर में भी सूँघ सकते हैं परंतु वाटिका में कुछ और बात होती है । इस प्रकार निर्णय करके बूढ़ी काकी हाथों के बल सरकती हुई बड़ी कठिनाई में चौखट से उतरीं और धीरे-धीरे रेंगती हुई कड़ाह के पास आ बैठीं।

रूपा उस समय कार्य भार से उद्‌ग्नि हो रही थी। कभी इस कोठे में जाती, कभी उस कोठे में,कभी कड़ाह के पास आती, कभी भंडार में जाती। किसी ने बाहर से आकर कहा- 'महाराज ठंडाई माँग रहे हैं।'

R.KUMAR'S ACADEMY

१. संजाल पूर्ण कीजिए : २

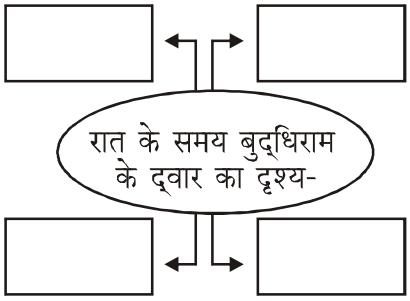

२. 'बुढ़ापा तृष्णा रोग का अंतिम समय है' इस विषय पर अपना विचार लिखिए : २

प्र ४ निम्नलिखित शब्द का संधिभेद पहचानकर संधिविच्छेद किजीए : १

i) सदैव -

संधि	संधि भेद	संधि विच्छेद
सदैव	--------	---------

प्र ५ वृत्तांत - लेखन :

निम्नलिखित विषयों से संबंधित वृत्तांत तैयार कीजिए : ५

२ अक्तूबर, २०१८
स्वच्छता अभियान
स्वराज्य विद्यालय

****

B.KUMAR'S ACADEMY